Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

24

छायावाद की आधार स्तंभ : महादेवी वर्मा

प्रो. डॉ. दत्तात्रय लक्ष्मण येडले
हिंदी विभाग,
श्री संत सावता माली ग्रामीण महाविद्यालय फुलंब्री, जि. छत्रपति संभाजीनगर

'आधुनिक युग की मीरा' कही जाने वाली महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद में होली के दिन 26 मार्च1907 में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा उज्जैन में हुई और एम. ए. उन्होंने संस्कृत में प्रयाग विश्वविद्यालय से किया। बचपन से ही चित्रकला, संगीतकला और काव्यकला की ओर उन्मुख महादेवी विद्यार्थी जीवन से ही काव्य प्रतिष्ठा पाने लगी थीं। वह बाद के वर्षों में लंबे समय तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या रहीं। वह इलाहाबाद से प्रकाशित 'चाँद' मासिक पत्रिका की संपादिका थीं। महादेवी वर्मा छायावाद की चौथी स्तंभ भी कही जाती हैं। प्रणय एवं वेदनानुभूति, जड़ चेतन का एकात्म्य भाव, सौंदर्यानुभूति, मूल्य चेतना, रहस्यात्मकता उनकी मुख्य काव्य-वस्तु है।

उन्होंने अपने काव्य में प्रतीकात्मक संकेत-भाषा का प्रयोग किया है जिसमें छायावादी प्रतीकों के साथ ही मौलिक प्रतीकों का भी कुशल प्रयोग हुआ है। उन्होंने कविताओं के साथ ही रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध, डायरी आदि गद्य विधाओं में भी योगदान किया है। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्य गीत', 'यामा', 'दीपशिखा', 'साधिनी', 'प्रथम आयाम', 'सप्तपर्णा', 'अग्निरेखा' उनके काव्य-संग्रह हैं। रेखाचित्रों का संकलन 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में किया गया है। 'शृंखला की कड़ियाँ', 'विवेचनात्मक गद्य', 'साहित्यकार की आस्था' आदि रचनाएं हैं। भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण और पद्म विभूषण पुरस्कारों से सम्मानित किया। उन्हें यामा के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

महादेवी वर्मा के काव्य में रहस्यवाद -

आधुनिक हिंदी साहित्य मे छायावाद की अवतारणा के बाद ही रहस्यवाद का रूप देखने को मिलता हैं। रहस्यवाद प्रकृति के माध्यम से आत्मा-परमात्मा मे प्रेमसंबंध की काव्यात्मक अभिव्यक्ति हैं। रहस्यवाद के संबंध में महादेवी ने 'सांध्य गीत' की भूमिका में लिखा है- "आज गीतों में जिसे हम रहस्यवाद के रूप में ग्रहण कर रहे हैं उसने पराविद्या की अपार्थिवता ली, वेदांत के अद्वैत की छाया मात्र ग्रहण की, लौकिक प्रेम से तीव्रता उधार ली और इन सबको कबीर के सांकेतिक दांपत्य भाव सूत्र में बाँधकर एक निराले स्नेह-संबंध की सृष्टि कर डाली जो मनुष्य के हृदय को पूर्ण अवलंब दे सका।' [1]

महादेवी जी 'यामा' की भूमिका में रहस्य के स्रोत को स्पष्ट करती है- "पहले बाहर खिलनेवाले फूल को देखकर मेरे रोम-रोम में ऐसा पुलक दौड़ जाता था मानों वह मेरे ही हृदय में खिला हो, परंतु उसके अपने से भिन्न अप्रत्यक्ष अनुभव में एक अव्यक्त वेदना थी। फिर वह सुख-दुःख मिश्रित अनुभूति ही चिंतन का विषय बनने लगी।" [2]

महादेवी के काव्य में रहस्यवाद की तीनों अवस्थाओं के दर्शन होते हैं- 1. मिलन की आतुरता, 2. मिलन की अवस्था, 3. वियोग का दुःख आदि।

प्रकृति-रहस्यवाद - महादेवी जी ने प्रकृति में भी अपने अज्ञात प्रिय की झलकियाँ देखी है। जो प्रिय मिलन के लिए उत्कंठित रहती हैं। विरह में ओस के फुलों की पीड़ा भी वह सहती है, तो मिलन और चुंबन के आमोद में वह अरूण हो उठती हैं। यही महादेवी जी के काव्य का प्रकृति रहस्यवाद हैं।

दार्शनिक रहस्यवाद - महादेवी जी ने अपने काव्य में आत्मा-परमात्मा के पारस्पारिक संबंधों का विवरण और जीवन में सुख दुःख के परिधानों को दार्शनिक आधार पर अभिव्यक्त किया हैं। इसे दार्शनिक रहस्यवाद के नाम से अभिहित किया जा सकता है। महादेवी जी की जिज्ञासा भी सहेतुक हैं। सृष्टि का इंद्रजाल उनकी जिज्ञासा को द्विगुणित कर देता है। इस संबंध में वह कहती है-

"और यह विस्मय का संसार
अखिल वैभव का राजकुमार
धूलि में क्यों खिलकर नादान
उसी में होता अन्तर्धान।" [3]

कवयित्री के हृदय की यह जिज्ञासा उनके रहस्यवाद का प्रथम सोपान हैं। उनकी जिज्ञासा इतनी प्रबल बन गयी है कि वह अज्ञात को ज्ञात की परिधि में बाँध लेना चाहती हैं। अतः प्रिय का रहस्यमय खेल कवयित्री के लिए चकवी की रजनी बन रहा है।

"वही कौतुक रहस्य का खेल
बन गया है असीम अज्ञात
हो गयी उसकी स्पंदन एक मुझे अब चकवी को चिर रात।" [4]

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

प्रिय का रूप रहस्यमय - महादेवी जी का प्रिय अलौकिक, अज्ञात तथा रहस्यमय हैं। वह अज्ञात लोक से मर्त्यलोक की धरा पर उतर आता हैं। प्रियतम की सीमा निस्सिमता में हैं। उसकी छाया को कवयित्री के नेत्र अच्छी तरह जानते हैं। महादेवी जी का प्रिय अलबेला सा है।

"मैं अलबेली नारि वलय कुछ मेरा अलबेला सा है।"

उनका प्रिय सबके सो जाने पर भी जागता रहता है-

"सो रहा है विश्व पर प्रिय तार को में जागता है।"

उसका हास-परिहास महादेवीजी को बड़ा ही प्रिय है। उसका हास फूलों में व्याप्त है।

"प्रिय को भाता तम के परदों पर आना
नभ की तारावलियों तुम पलभर को बुझ जाना।"

महादेवी का मिलन उस अज्ञात प्रिय से हुआ है किंतु वह मिलन मूक था। इस मूक मिलन को झुठलानेवालों को उनकी प्रेयसी चुनौती देती हैं।

"कैसे कहती हो सपना हैं
अलि उस मूक मिलन की बात
भरे हुए अब तक कलियों में
मेरे आँसू उनके हास।"

वियोगावस्था - प्रिय के अभाव में महादेवी का 'जीवन विरह का जलजात' बन गया है। इस वेदना में हाहाकार नहीं, संयम और धैर्य हैं। पीड़ा ही महादेवी के लिए प्रिय हैं। महादेवी को प्रिय से शिकायत है, न कोई शिकवा हैं। उसे तो कुछ भी होश नहीं हैं। वह कहती

"कैसे संदेश प्रिय पहुँचाती
कुछ लिखती कुछ लिख जाती।"

महादेवी के काव्य में वेदना भाव -

महादेवी के गीतों में वेदना भाव की सर्वोच्च स्थिति है। महादेवी जी वेदना के व्यापक प्रभाव को प्रकट करने के लिए ही अपने काव्य में वेदना को स्थान देती हैं। वेदना के व्यापक प्रभाव का स्वरूप इसप्रकार देखा जा सकता है-

"दुख के पद छू बहते झर झर
कण-कण से आँसू के निर्झर
हो उठता जीवन मृदु उर्वर
लघु मानस में वह असीम जग को आमंत्रित कर लाता।"

दुखवाद के संबंध में उनका कथन भी उल्लेखनीय है, "अपने दुःखवाद के विषय में भी दो शब्द कह देना आवश्यक जान पड़ता है। सुख और दुख के धूप छाही डोरों से बुने हुए जीवन में मुझे केवल दुख ही गिनते रहना क्यों इतना प्रिय है, यह बहुत लोगों के आश्चर्य का कारण है- जीवन में मुझे बहुत आदर और बहुत मात्रा में सबकुछ मिला है, परंतु उस पर दुख की छाया नहीं पड सकी। कदाचित यह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे इतनी मधुर लगने लगी है।" [5]

महादेवी जी की सहानुभूति समाज के प्रति रही। समाज के विषम एवं नैराश्यपूर्ण जीवन के प्रभाव ने बौद्ध दर्शन के प्रभाव ने और वैदिक दार्शनिक सिद्धांतो के प्रभाव ने भी वेदना की काव्य में अनिवार्यता प्रदान की है। बुद्ध की व्यापक करूणा जो विश्व की मंगल कामना से अनुस्यूत थी। पीडा ही उन्हें प्रिय है और पीड़ा में अपने आराध्य की खोज इष्ट है।

"शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की कीड़ा
तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा तुम में ढूढूगी पीड़ा।"

इस वेदना का चरमोत्कर्ष निराशा के कोड़ में जाकर होता है। जहाँ कवयित्री मुरझाये फूल को देखकर दुखी होती है।

'जब न तेरी ही दशा पर
दुख हुआ संसार को, कौन रोयेगा सुमन।
हमसे मनुज निसार को।

'कौन रोयेगा सुमन' इन शब्दों में कवयित्री के हृदय का क्षोभ, असमर्थथा और व्याकुलता व्यंजित होती है।

महादेवी का काव्य सर्वांश में वेदनामय है। वेदना और पीड़ा को एक दार्शनिक पृष्ठभूमि में ग्रहण किया है। उनके प्राणों क्रीडा वेदनामय है। वे अपने आराध्य की उपलब्धि पीड़ा में कहती है और आराध्य में पीडा को उपस्थित करना चाहती है-

"पर शेष नहीं होगी यह, मेरे प्राणों की कीड़ा।
तुमको पीड़ा में दूँवा, तुममें बुझँगो पीड़ा।"

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

महादेवी के काव्य में वेदान्त दर्शन भी है। अनंत परमात्मा का स्वरूप आत्मा नाम रुपात्मक जगत में सृष्टि काल में ही आकर अपने उसी परमतत्व (बह्म) की प्राप्ति में व्यथित है और वही वेदनातस्य या विरहानुभूति महादेवी के काव्य का वेदना भाव है।

महादेवी के काव्य में गीति-तत्त्व

महादेवी जी ने लिखा है 'साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख-दुःखात्मक अनुभूति का वह शब्दरूप है, जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।' गीतिकाव्य में भावानुकूलता, मार्मिकता, प्रेषणियता के साथ ही आवेग की तीव्रता गीति के रूप में व्यक्त होती हैं। महादेवी के काव्य में गीतिकाव्य संबंधी सभी तत्त्व मिलते है-

आत्माभिव्यक्ति- स्वानुभूति गीतिकाव्य का प्राण है। कवि किसी भाव से विभोर होकर उसे गोति के रूप में अभिव्यक्ति देने के लिए विवश हो जाता हैं। आ. नंददुलारे वाजपेयी ने इस सबंध में लिखा है- "प्रगीत में ही कवि का व्यक्तित्व पूरी तरह प्रतिविवित होता है। वह कावि की अच्छी अभिव्यंजना होती है। कवि के अन्तस्थल का उद्घाटन प्रगीत में ही संभव है।" [6]

महादेवी का करूणापूर्ण व्यक्तित्व उनके गीतों में सफलता के साथ व्यक्त हुआ है। उस करूणा का कारण कुछ भी रहा हो, किंतु वास्तव में वह प्रियतम के विरह से अद्भुत पीड़ा का प्रतिफलन प्रतीत होती है।

"विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास।
अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।
जीवन विरह का जलजात ।।" [7]

इस विरहजन्य पीड़ा ने कवयित्री को करूणा की प्रतिमूर्ति बना दिया है। "मैं नौर भरी दुःख की बदली।"

प्रियतम की चितवन ने पीड़ा का जो साम्राज्य कवयित्री को दिया है। उसे उसने अपनी आत्मा में बसा लिया है।

"तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुम मम्मी ढूढ़ूंगी पीड़ा।"

गेयता या संगीतात्मकता - गीतिकाव्य का अनिवार्य तत्त्व गेयता है। महादेवी के गीतिकाव्य की यह विशेषता है कि उसमें काव्य का अर्थ-गांभीर्य और संगीत का स्वर माधुर्य संतुलित रूप से समन्वित है। भावना के तीव्र वेग के कारण उनके गीतों में तरल प्रवाह है। महादेवी जी ने स्वयं लिखा है- "काव्य का वहीं अंश गेय कहा जाएगा, जो अनुभूति की तीव्रता को संगीत के लिए उपयुक्त शब्द संयोजन द्वारा व्यक्त कर सके।" भावों के अनुकूल गीतों की गति और उनका आरोह-अवरोह उन्हें संगीतात्मकता प्रदान करता है-

"मधुर मधुर मेरे दीपक जल।
युग-युग, प्रतिदिन, प्रतिक्षण, प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।"

डॉ. विनय मोहन शर्मा के इस संबंध में लिखा है- "प्रसाद के गीतों में भाव-प्रवणता, निराला के गीतों में चिंतन एवं महादेवी के गीतों में दोनों का समावेश है।"

भावाकुलता - गीतिकाव्य तीव्र भावावेग की स्वाभाविक परिणति हैं। वह हृदय से निकलकर हृदय को प्रभावित करती हैं। डॉ. नगेंद्र ने इस संदर्भ में लिखा है "जब कभी आत्मा भाव की अग्नि से पिघलकर बहने को हुई हैं उसके ताप से वाणी भी द्रवीभूत हो गयी हैं और भाव ने गीत का रूप धारण कर लिया है। अतएव जब जब हमारा जीवन दर्शन व्यक्तिपरक अथवा भावपरक हुआ है, काव्य में गीति का महत्त्व बढ़ गया है।"

संक्षिप्तता - भावान्विति, भाव प्रभाव की तीव्रता तथा गेयता के लिए गीत की संक्षिप्तता वांछनीय है। जो श्रोता या पाठक के हृदय पर त्वरित तथा सीधा प्रभाव डालती है।

निष्कर्ष :महादेवी जी की यह विशेषता है कि उनका भाव कला सौंदर्य से और भी निखर उठा है। डॉ. सच्चिदानंद तिवारी ने संबंध में लिखा है- "जिसमें अपने परमप्रिय के प्रति जितनी ही निष्ठा है, उसकी भावना उतनी ही बलवती है और चूंकि महादेवी ने अपने संपूर्ण कवित्व का उपयोग अपने रहस्यमय आराध्य की अर्चना में ही कर दिया है। इसलिए उनके समान भावावेग अन्यन्त्र उपलब्ध नहीं है।

संदर्भ :

1 सांध्यगीत - भूमिका, महादेवी वर्मा, पृष्ठ - 4
2 यामा - भूमिका, महादेवी वर्मा, पृष्ठ - 6
3 यामा - महादेवी वर्मा, पृष्ठ - 24
4 यामा - महादेवी वर्मा, पृष्ठ - 24
5 यामा - महादेवी वर्मा, पृष्ठ - 740
6 आधुनिक साहित्य : सृजन और समीक्षा - आ. नंददुलारे बाजपेयी, पृष्ठ -126
7 जीवन विरह का जलजात - महादेवा वर्मा, पृष्ठ - 31

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved